जो दीवार पर लगे-लगे बात कहे—पोस्टर

कमला भसीन

शहरों और गांवों की दीवारों पर आपने हाथ-दो हाथ बड़े कागज़ चिपके ज़रूर देखे होंगे जिन पर कोई तस्वीर बनी होती है और कुछ लिखा होता है या सिर्फ कुछ लिखा होता है। इन्हीं को पोस्टर कहते हैं। अपनी बात लोगों तक पहुंचाने के लिए पोस्टरों को जगह-जगह चिपका दिया जाता है। आते-जाते लोग इन्हें देखते और पढ़ते हैं और पोस्टर बनाने और चिपकाने वालों का संदेश लोगों तक पहुंच जाता है। दिल्ली जैसे शहर में तो रोज़ ही दीवारों पर नये-नये पोस्टर दिखते हैं। ज्यादातर पोस्टर राजनीति, बिकाऊ चीज़ों या फ़िल्मों के बारे में होते हैं। वहां धरना है या वहां फलाने नेता जी बोल रहे हैं या सस्ती चादरें वहां बिक रही हैं या उस सिनेमा हाल में फलां पिक्चर लग रही है, यही सब होता है।

कभी-कभी कुछ रंगीन पोस्टर घरों, दफ्तरों, रेलवे या बस स्टेशनों के अंदर लगाने के लिए भी बनाए जाते हैं। इन पोस्टरों में किसी ऐतिहासिक इमारत जैसे ताज महल, किसी सुंदर दृश्य जैसे हिमालय, किसी महान स्त्री या पुरुष या किसी अभिनेता या अभिनेत्री की तस्वीर हो सकती है।

बहुत से महिला संगठन भी अपनी बात औरों तक पहुंचाने के लिए पोस्टरों का इस्तेमाल करते आए हैं। अधिकतर औरतों के संगठनों के पोस्टर घरों, संगम या संघ के दफ्तरों, स्कूलों में लगाने के लिए बनाए जाते हैं। सड़कों पर मैंने महिलाओं के पोस्टर कम देखे हैं।

पोस्टर की ख़ासियत

हम लोगों ने पोस्टरों का इस्तेमाल इसलिए अधिक किया क्योंकि हम इन्हें खुद भी बना सकते हैं। जिसको भी थोड़ी बहुत तस्वीर बनानी आती हो, साफ़ लिखना आता हो वह पोस्टर बना सकती है। अगर किसी समूह ने कोई धरना करना है या किसी बात पर मोर्चा निकालना है तो कार्यकर्ता बड़े-बड़े कागज़ों पर अपनी बात लिख कर दीवार पर लगा देते हैं या पोस्टर को गत्ते पर चिपका कर अपने हाथ में पकड़ लेते हैं। आप पोस्टर किसी पोस्टर कलाकार से भी बनवा सकते हो जिनका काम ही पोस्टर बनाना होता है।

अगर ज्यादा तादाद में चाहिएं तो आप एक पोस्टर बनाकर उसे छपवा भी सकते हैं। पोस्टरों का एक फायदा यह भी है कि वे काफी सस्ते बनाए जा सकते हैं। अच्छे पोस्टरों से दीवारें सज भी जाती हैं और आपकी बात भी औरों तक पहुंचती रहती है।

पोस्टर हर तरह के होते हैं लेकिन अच्छा पोस्टर वह है जिसमें संदेश छोटा व साफ हो। पोस्टर ऐसा बना होना चाहिए कि वह लोगों का ध्यान अपनी तरफ खींचे, कोई उसे देखे और पढ़े बिना आगे जा ही न सके। अच्छा पोस्टर हमें सोचने को भी मजबूर करता है, बातचीत या बहस के लिए बुलावा देता है। पोस्टर में अगर घिचपिच हो, कई तस्वीरें हों, कई बातें लिखी हों तो पोस्टर का असर कम हो जाता है।

इसीलिए अच्छा पोस्टर बनाने से पहले जिस विषय पर पोस्टर बनाना है उसके बारे में गहराई से सोचना ज़रूरी है। उस विषय के सबसे ज़रूरी पहलुओं को अलग करना ज़रूरी है।

मैं कुछ ऐसे पोस्टरों के उदाहरण देती हूं जो लोगों को अच्छे लगे व जिनका बहुत इस्तेमाल हुआ।

करीब सात-आठ साल पहले दिल्ली में एक पोस्टर बना था। बनाने वाले कहना चाहते थे कि औरतों को अन्याय सहने से मना कर देना चाहिए, अन्याय सहना गलत है। इस पर जो पोस्टर बनाया उसमें एक औरत का चेहरा था लेकिन उस औरत का मुंह नहीं था। (पृष्ठ 2 देखें)
पोस्टर पर लिखा था—

'औरत की मजबूर खामोशी जुल्म का आधार है।

इस मजबूरी को छोड़ो,
इस खामोशी को तोड़ो'

संगठन में जो शक्ति होती है उस पर दो पोस्टर बनाये थे। एक में हिंदी कहावत "एक और एक ग्यारह" लिखा था और एक बहुत ही आसानी से बनाया चित्र था।

दहेज के ख़िलाफ़, औरतों की मार-पीट, नशाखोरी के ख़िलाफ़ भी बहुत से पोस्टर बनाए गए हैं। औरतों के कभी न खत्म होने वाले काम के बोझ पर भी कई पोस्टर बने हैं।

अभी हाल में धर्म के नाम पर फैलाई जाने वाली हिंसा के ख़िलाफ़ कई संगठनों ने बहुत अच्छे पोस्टर बनाए हैं।

चूंकि यह साल "बालिका वर्ष" है दिल्ली की संस्था "जागोरी" ने नौ पोस्टरों का एक सेट बनाया है। हर पोस्टर में एक तस्वीर है और हिंदी व उर्दू में संदेश है। ये सेट तथा कई और पोस्टर इस पते से मंगवाए जा सकते हैं —

जागोरी
बी-5 हाउसिंग कोऑपरेटिव सोसायटी
साउथ एक्सटेंशन पार्ट-1
नई दिल्ली-110049

शिविरों और ट्रेनिंग में बातचीत शुरू करने के लिए पोस्टरों का खूब इस्तेमाल होता है।

अगर आपकी संस्था ने पोस्टर बनाए हों तो 'सबला' को भेजें ताकि हम उन्हें औरों तक पहुंचा सकें। □